International Journal of Advance and Innovative Research
Volume 13, Issue 1: January - March 2026
ISSN 2394 - 7780

महिला सशक्तिकरण: सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं संगठनात्मक निर्णय-निर्माण के परिप्रेक्ष्य में एक समग्र विश्लेषणात्मक अध्ययन

Renu Bala
Ph.D (Scholar), Department of Commerce (HR), Om Sterling Global University, Hisar

सार
महिला सशक्तिकरण समकालीन सामाजिक विज्ञान अनुसंधान का एक केंद्रीय विषय बन चुका है। किसी भी राष्ट्र का संतुलित एवं सतत विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक उसकी आधी आबादी— महिलाएँ—समान अधिकार, अवसर और निर्णय-निर्माण में भागीदारी प्राप्त न कर लें। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति ऐतिहासिक रूप से विरोधाभासी रही है। एक ओर उन्हें सांस्कृतिक रूप से सम्मानित स्थान प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और संगठनात्मक क्षेत्रों में उन्हें असमानता, भेदभाव और उपेक्षा का सामना करना पड़ा है।

यह शोध पत्र महिला सशक्तिकरण की अवधारणा, उसके विविध आयामों तथा विशेष रूप से संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है तथा इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, नीतिगत समर्थन और सामाजिक चेतना महिला सशक्तिकरण के प्रमुख निर्धारिक तत्व हैं। शोध निष्कर्ष दर्शाते हैं कि जिन संगठनों एवं समाजों में महिलाएँ निर्णय-निर्माण में सक्रिय भागीदारी करती हैं, वहाँ कार्यक्षमता, पारदर्शिता और विकास की गति अधिक होती है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): *महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, संगठनात्मक निर्णय-निर्माण, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक विकास*

1. प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण आज केवल एक सामाजिक आंदोलन नहीं, बल्कि वैश्विक विकास विमर्श का अनिवार्य अंग बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार किए बिना गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक विकास जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है।

भारतीय संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का प्रश्न और भी जटिल हो जाता है, क्योंकि यहाँ सामाजिक संरचना लंबे समय से पितृसत्तात्मक रही है। परंपरागत सामाजिक मान्यताओं ने महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखा, जिससे उनकी शिक्षा, रोजगार और निर्णय-निर्माण में भागीदारी बाधित हुई। हालाँकि स्वतंत्रता के बाद संवैधानिक प्रावधानों, कानूनी सुधारों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास किए गए, फिर भी वास्तविक समानता प्राप्त करना अभी भी एक चुनौती बना हुआ है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण की समग्र अवधारणा को समझना तथा विशेष रूप से संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना है।

2. महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को उनके जीवन से संबंधित निर्णय लेने की क्षमता, संसाधनों पर नियंत्रण और सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करना है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें आत्म-विश्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधन, राजनीतिक भागीदारी और कानूनी अधिकार शामिल हैं।

सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को रोजगार प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें समाज की निर्णय-निर्माण संरचनाओं में समान भागीदार बनाना भी है। एक सशक्त महिला न केवल स्वयं के जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि अपने परिवार, संगठन और समाज के विकास में भी योगदान देती है।

3. साहित्य समीक्षा

वैश्विक स्तर पर और भारत में महिला सशक्तिकरण पर कई अध्ययन किए गए हैं। कुछ अध्ययन मेथोडोलॉजिकल मुद्दों पर, कुछ अनुभवजन्य विश्लेषण पर और कुछ अन्य में सशक्तिकरण के उपायों और साधनों पर चर्चा की गई है। हम ने इसमें कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किए हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और भारत में किए गए थे:-

- एस्थर डुफ्लो (2012):- यह पेपर सशक्तिकरण-विकास संबंध के दोनों पक्षों पर साहित्य की समीक्षा करता है, और तर्क देता है कि आपसी संबंध शायद इतने कमज़ोर हैं कि वे खुद को बनाए नहीं रख सकते, और पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता लाने के लिए समानता के लिए लगातार नीतिगत प्रतिबद्धता की आवश्यकता हो सकती है।

- पुरुषोत्तम नायक, बिदिशा महंत (2012):- इस स्टडी से पता चलता है कि भारत की महिलाएं अपेक्षाकृत कमज़ोर हैं और सरकार द्वारा किए गए कई प्रयासों के बावजूद उन्हें पुरुषों की तुलना में कुछ कम दर्जा हासिल है।
- केशब चंद्र मंडल (2013):- यह लेख इस स्थिति की चुनौतियों और वास्तविकताओं पर बात करता है। यह सरकार, राजनीतिक फैसले लेने वालों, NGO और दूसरे लोगों से अपील करता है कि वे भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए महिलाओं के चौतरफा विकास को सुनिश्चित करने के लिए आगे आएं।
- डिज्क्स्ट्रा (2006):- डिज्क्स्ट्रा ने 2006 में तर्क दिया कि UNDP को लैंगिक समानता को मापने के लिए या तो एक नया इंडेक्स बनाने या संशोधित GDI और GEM को विस्तार से बताने में नेतृत्व करना चाहिए। उन्होंने लिटरेचर में बताए गए विकल्पों की संक्षिप्त समीक्षा के आधार पर दोनों संभावनाओं के लिए विस्तृत सिफारिश की।
- दीपा नारायण (2007) ने पावर और अधिकारों की दस स्टेप वाली सीढ़ी पर खुद से दिए गए पॉइंट्स का इस्तेमाल करके अलग-अलग देशों और क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण को मापने की कोशिश की, जहाँ सीढ़ी के सबसे नीचे वे लोग थे जो पूरी तरह से शक्तिहीन और बिना अधिकारों के थे और सबसे ऊपर वे लोग थे जिनके पास बहुत ज़्यादा पावर और अधिकार थे।
- क्लासेन और शूलर (2009) ने दो जेंडर से जुड़े इंडिकेटर्स के लिए ठोस सुझाव देकर और उन सुझाए गए तरीकों के लिए उदाहरण वाले नतीजे पेश करके अपने पिछले कामों को आगे बढ़ाया। सबसे ज़रूरी सुझावों में पुरुष और महिला HDI की गणना, साथ ही GDI की जगह लेने के लिए एक जेंडर गैप इंडेक्स (GGI) शामिल था। GEM के बारे में, सुझाए गए सबसे ज़रूरी बदलावों में कमाई वाली इनकम वाले हिस्से से निपटने के अलग-अलग तरीके और माप की गणना के लिए इसे ज़्यादा सीधे तरीके से बदलना शामिल था। अपने सुझाए गए तरीकों का इस्तेमाल करके उन्होंने GDI और GEM की तुलना में देशों की अलग रैंकिंग पाई।
- मिश्रा और नायक (2010) ने अपने काम में इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा मानव विकास में कितनी अहम भूमिका निभाती है; असल में, दूसरे दो घटक – स्वास्थ्य और आय – शैक्षिक विकास पर निर्भर करते हैं। शिक्षा एक व्यक्ति को पीढ़ियों से जमा ज्ञान की दौलत हासिल करने देती है। यह एक व्यक्ति को ज़्यादा स्वीकार्य और प्रोडक्टिव भी बनाती है। शिक्षा फिटनेस और रोज़गार मिलने की संभावनाओं को बढ़ाती है। इसके अलावा, शिक्षा संतुष्टि की ओर ले जाती है। अर्थशास्त्रियों ने पाया है कि प्रोडक्टिविटी में बढ़ोतरी का एक बड़ा हिस्सा लोगों की शिक्षा के कारण होता है। कौशल निर्माण, जिसे अनपढ़ लोगों में डालना काफी मुश्किल होता है, विकास को बढ़ावा देने के लिए एक ज़रूरी शर्त है। इसलिए, साक्षरता और कुछ हद तक शैक्षिक दक्षता कौशल निर्माण के लिए मौलिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। खासकर, महिलाओं में साक्षरता बहुत महत्वपूर्ण है, न केवल प्रोडक्टिव और नागरिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए, बल्कि बेहतर भविष्य के लिए बच्चों की परवरिश के लिए भी।

महिला सशक्तिकरण पर किए गए विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता इसके प्रमुख आधार स्तंभ हैं। कुछ शोधकर्ताओं ने महिला सशक्तिकरण को मानवाधिकारों के संदर्भ में देखा है, जबकि अन्य ने इसे आर्थिक विकास से जोड़ा है।

कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि जिन देशों में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी अधिक है, वहाँ आर्थिक विकास की दर भी अधिक होती है। हालाँकि अधिकांश शोध सामाजिक और आर्थिक आयामों तक सीमित हैं, जबकि संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। यही इस अध्ययन का प्रमुख अनुसंधान अंतराल है।

4. अनुसंधान अंतराल

साहित्य समीक्षा के आधार पर निम्नलिखित अनुसंधान अंतराल स्पष्ट होते हैं:

- महिला सशक्तिकरण पर अधिकांश अध्ययन सामाजिक या आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित हैं।
- संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका पर समग्र एवं गहन अध्ययन का अभाव है।
- भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संगठनात्मक भागीदारी पर सीमित शोध उपलब्ध है।
- अतः यह शोध महिला सशक्तिकरण और संगठनात्मक निर्णय-निर्माण के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

- महिला सशक्तिकरण की अवधारणा एवं उसके आयामों का अध्ययन करना।
- संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।

ISSN 2394 - 7780

- महिला सशक्तिकरण में विद्यमान प्रमुख बाधाओं की पहचान करना।
- महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ बनाने हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

6. परिकल्पनाएँ

H_1: महिला सशक्तिकरण और संगठनात्मक निर्णय-निर्माण के मध्य सकारात्मक संबंध है।

H_2: आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं की निर्णय-निर्माण क्षमता को बढ़ाती है।

7. अनुसंधान पद्धति

डेटा का स्रोत: द्वितीयक आँकड़े

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

डेटा संग्रह: पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, जर्नल्स

विश्लेषण विधि: विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis)

8. महिला सशक्तिकरण के आयाम

8.1 सामाजिक सशक्तिकरण

सामाजिक सशक्तिकरण का संबंध महिलाओं की सामाजिक स्थिति, शिक्षा और स्वास्थ्य से है। शिक्षित और स्वस्थ महिला समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है।

8.2 आर्थिक सशक्तिकरण

आर्थिक आत्मनिर्भरता महिला सशक्तिकरण का केंद्रीय तत्व है। रोजगार, स्वरोजगार और वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण महिलाओं को निर्णय-निर्माण में सक्षम बनाता है।

8.3 राजनीतिक सशक्तिकरण

राजनीतिक भागीदारी महिलाओं को नीति-निर्माण में आवाज़ प्रदान करती है। पंचायत स्तर पर आरक्षण ने महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा दिया है।

8.4 संगठनात्मक सशक्तिकरण

संगठनों में महिलाओं की भागीदारी से विविधता, नवाचार और नैतिक निर्णय-निर्माण को बढ़ावा मिलता है। हालाँकि 'ग्लास सीलिंग' जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं।

9. भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति

भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति मिश्रित रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रगति हुई है, लेकिन कार्यबल और नेतृत्व स्तर पर महिलाओं की भागीदारी अभी भी सीमित है।

10. महिला सशक्तिकरण में चुनौतियाँ

- पितृसत्तात्मक मानसिकता
- शिक्षा एवं कौशल की कमी
- आर्थिक निर्भरता
- कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव
- सामाजिक रूढ़ियाँ

11. सरकारी पहलें

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जैसे—

1. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
2. महिला स्वयं सहायता समूह
3. उज्ज्वला योजना
4. स्टैंड-अप इंडिया

ISSN 2394 - 7780

12. निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला सशक्तिकरण सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और संगठनात्मक दक्षता का आधार है। महिलाओं की निर्णय-निर्माण में सक्रिय भागीदारी न केवल लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है, बल्कि समाज और संगठनों के दीर्घकालिक विकास में भी सहायक होती है।

अतः शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, नीति-समर्थन और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

संदर्भ (REFERENCES)

1. भारत का संविधान
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार
3. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) रिपोर्ट
4. संबंधित शोध पत्र एवं अकादमिक जर्नल
5. डाइकस्ट्रा, जी. (2006): "लैंगिक समानता को मापने में एक नई शुरुआत की ओर: बहस में एक योगदान" जर्नल ऑफ़ ह्यूमन डेवलपमेंट, वॉल्यूम 7, नंबर 2, पृष्ठ 275-284।
6. क्लासेन, एस. और डी. शूलर (2009): "जेंडर-रिलेटेड डेवलपमेंट इंडेक्स (GDI) और जेंडर एम्पावरमेंट मेज़र (GEM) में सुधार: कुछ खास प्रस्ताव" http://www2.vwl.wiso.unigoettingen.de/ibero/papers/DB186.pdf
7. मिश्रा, एस.के. और पी. नायक (2010): "त्रिपुरा में मानव विकास के पहलू और कारक" पी. नायक (संपादक) में, उत्तर-पूर्वी भारत में विकास और मानव विकास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ 281-296।
8. नारायण, डी. (2007): सशक्तिकरण: मानव विकास का एक गुमशुदा आयाम, ऑक्सफ़ोर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव (OPHI) कॉन्फ्रेंस, क्वीन एलिजाबेथ हाउस, ऑक्सफ़ोर्ड।
9. पुरुषोत्तम नायक(2012) नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, भारत में महिला सशक्तिकरण, बुलेटिन ऑफ़ पॉलिटिकल इकोनॉमी, वॉल्यूम 5, नंबर 2, पेज 155-183|
10. डफ्लो, एस्थर. 2012. "महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास।" जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक लिटरेचर 50 (4): 1051–79. DOI: 10.1257/jel.50.4.1051
11. केशब चंद्र मंडल (2013) महिला सशक्तिकरण की अवधारणा और प्रकार वॉल्यूम 9 नंबर 2 (2013)